ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

''वैदिक कालीन शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता : एक समीक्षात्मक अध्ययन''

गुंजन फौजदार (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)
डॉ. अनिता सिंह (शोध निर्देशक) शिक्षा विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

प्रस्तावना–

भारत विश्व का प्राचीनतम देश है। इसकी संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। ज्ञान–विज्ञान में भारत काअद्वितीय स्थान था। विश्व के सभी ज्ञानपिपासु ज्ञानार्जन के लिए भारत की ओर आते थे। भारत इसी कारण से विश्वगुरुकहलाता था। भारतीय शिक्षा का आरम्भ प्रकृति की गोद में मानव की मूलभूत जिज्ञासा की शान्ति के लिए हुआ था।भारत में शिक्षा के तत्त्व, प्रणाली तथा संगठन का स्वरूप प्रायः वैदिक युग से माना जाता है। सृष्टि के आदि वेदों केआविर्भाव से लेकर आज तक मानव को जैसा वातावरण, समाज व शिक्षा मिलती रही, वह वैसा ही बनता चला गया।इतिहास के दर्पण में झाँकते ही हमारा अपना प्रतिबिम्ब मुखरित हो उठता है। इतिहास की रेखाएँ हमारी वास्तविकता कादर्शन कराती हैं। आज इस जगत में जितनी बुद्धि,वैभव और भौतिक उन्नति दृष्टिगोचर होती है, वह पूर्वजों कीशिक्षाओं का प्रतिफल है। अतः मानव की उन्नति की साधिका शिक्षा है। भारत में यह निर्विवाद सत्य है कि यहाँ परआदि साहित्य वैदिक साहित्य ही माना जाता है। शिक्षा के सम्बन्ध में जितना सुव्यवस्थित वर्णन वेदों में मिलता है उतनासम्भवतः किसी अन्य साहित्य में उपलब्ध नहीं है। वेदों में शिक्षा का सुव्यवस्थित क्रमपूर्वक और सर्वांगीण विकास के रूप में वर्णन मिलता है।

भारत की सभ्यता एवं संस्कृति संसार की प्राचीनतम सभ्यता एवं संस्कृतियों में से एक है परन्तु इनमें सबसे अधिक प्राचीन कौन–सी है, इस विषय में सबके अपने–अपने दावे है। हाँ, यह बात सभी मानते हैं कि भारतीय वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद) संसार के प्राचीनतम ग्रंथ हैं। सामान्यताः वेदों को धार्मिक ग्रंथों के रूप में देख समझा जाता है, परन्तु वास्तव में वेद उस समय के ज्ञान कोश हैं। इनमें उस समय तक अर्थों द्वारा खोजा एवं विकसित समस्त भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान सूत्रा रूप में संग्रहीत है। परन्तु वेदों की रचना कब और किन विद्वानों ने की, इस विषय में विद्वान का मत नहीं हैं जर्मन विद्वान मैक्समूलर 'सबसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने भारत 'आकर इस क्षेत्र में शोध कार्य शुरू किया। उनके अनुसार, वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद है और इसकी रचना 1200 ई.पू. में हुई थी। लोकमान्य तिलक ने ऋग्वेद में वर्णित नक्षत्र स्थिति के आधार पर इसका रचना काल 4000 ई.पू. से 2500 ई.पू. सिद्ध किया है। पद्यश्री डॉ० वाकणकर के अनुसर वेदों की रचना 5000 ई.पू. तक हो चुकी थी।अब थोड़ा विचार करें इतिहासकारों के मत पर। इतिहासकार हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की खुदाई में प्राप्त अवशेषों के आधार पर हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को केवल ई.पू. 3500 वर्ष पुरानी मानते हैं। अपने गले यह बात नहीं उतरती। हतिहासकारों की बात को ही लीजिए। इन्होंने यह माना है कि हमारे देश भारत में ई.पू. 7 वीं शताब्दी में लोक भाषा प्राकृत और पाली थी। इन्होंने यह भी माना है कि उससे पूर्व हमारे देश में संस्कृत भाषा का प्रयोग होता था और वेदों की रचना हो चुकी थी। अब थोड़ा विचार करें वेदों की भाषा, शैली और विषय–सामग्री पर विचार करें, वेदों की संस्कृत भाषा इतनी समृद्ध एवं परिमार्जित है और उनकी विषय–सामग्री इतनी विविध, विस्तृत एवं उच्च कोटि की है कि उस समय इनके विकास में कम से कम 7–8 हजार वर्ष का समय अवश्य लगा होगा। इन तथ्यों के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारे देश की सभ्यता एवं संस्कृति कम से कम ई.पू. 10 हजार वर्ष पुरानी अवश्य है और इतना ही पुराना इसका शिक्षा का इतिहास है।

अध्ययन का महत्व एवं आवश्यकता–

भारत के इतिहास में यह निर्विवाद रूप से सत्य है कि जहाँ कहीं भी किसी सन्यासी द्वारा आश्रम या मठ की स्थापना हुई है वहीं ज्ञान का दीप जला है। जैसे–प्राचीन ऋषि मुनियों के आश्रम और बौद्ध मठों के प्राचीन विहार किसी समय ज्ञानचर्या के महत्वपूर्ण केन्द्र हुआ करते थे। जहाँ पर भारत के सांस्कृतिक इतिहास, चारों वेद (संहिता), उपनिषदों एव संस्कृत जैसे विषयों पर विस्तृत चर्चा व गहन मंथन होता था। जैसे–वृहदारण्यक उपनिषद से जानकारी मिलती है कि– राजा जनक के दरबार में 'ऋषि याज्ञवलक्य' एवं 'गार्गी' के बीच दार्शनिक संवाद हुआ था। ठीक इसी प्रकार कठोपनिषद में भी 'यम' और 'नचिकेता' के बीच दार्शनिक संवाद का उल्लेख है। वर्तमान

Copyright @ 2024 Author

शिक्षा व्यवस्था में यदि वैदिक शिक्षा व्यवस्था का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाए तो प्राचीन भारत का आध्यात्मिक मूल्य पुनः प्रतिस्थापित हो जाएगा। प्रस्तावित शोध अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है कि दोनों शिक्षा व्यवस्था (वैदिक शिक्षा व्यवस्था और वर्तमान शिक्षा व्यवस्था) ने शिक्षा सिद्धान्तों और शिक्षा प्रयोगों के बीच उचित रूप से तालमेल स्थापित करने का प्रयास किया है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली यद्यपि वैदिक शिक्षा प्रणाली से पूर्णतः भिन्न प्रतीत दिखता है, फिर भी वर्तमान शिक्षा को नियोजित करने व इसकी अनेक समस्याओं का समाधान खोजने की प्रत्येक चेष्टा में वैदिक शिक्षा के मूलभूत आधारों पर ध्यान देना सार्थक सिद्ध हो सकता है।

वैदिक शिक्षा के आदर्शों–श्रद्धा, भक्ति, सेवा, आदर, आत्म–अनुशासन सादा जीवन उच्च विचार, ब्रह्मचर्य, परम्परागत नैतिक मूल्य आदि का अनुसरण करके वर्तमान समाज की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था की जा सकती है। पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के अन्धानुकरण में हम अपने पुरातन आदर्शों को विस्मृत करते जा रहे हैं।शिक्षा हमारे जीवन से दूर हटती जा रही है दिग्भ्रांत युवकों और युवतियों की अनुशासनहीनता, छात्र असंतोष अश्लील नाटकों का खुला प्रदर्शन, मार–धाड़, लूट–खसोट, तस्करी और काला बाजारी, आधुनिकता के पर्याय बन चुका है। परिणाम स्वरूप सर्वत्र घुटन, असंतुलन, कुण्ठा, सन्त्रास, बिखराव और बेरोजगारी का प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा है। इस सन्दर्भ में महर्षि अरविन्द का उद्घोष द्रष्टव्य है–"आधुनिकता को चीरकर देखो तो तुम्हारी और घूरती हुई आदिम बर्बरता मिलेगी।"

यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली धर्म एवं नैतिक मूल्यों पर, अवस्थित न होने के कारण मानव के लिए वरदान न होकर अभिशाप बन गई है। महात्मा गांधी का कथन प्रसंगानुकूल है–"वैज्ञानिक प्रगति के पूर्व धार्मिक एवं नैतिक प्रगति का होना नितांत आवश्यक है अन्यथा व्यक्तिगत एवं सामाजिक प्रगति खतरे में पड़ जाएगी।" सामाजिक बिखराव का मूल कारण है, षाष्वत् धार्मिक मूल्यों की उपेक्षा आज मानवता के अस्तित्व की रक्षा धार्मिक उद्देश्यों में खोजनी होगी।

निर्धनता, वर्ग संघर्ष, सामाजिक बुराइयाँ, राष्ट्रीय विघटन, भाषायी समस्याएं जैसी अनुत्तरित समस्याएं दिन–प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही हैं। वैदिक शिक्षा प्रणाली के आदर्श तत्वों को वर्तमान शिक्षा में समावेश करके इन समस्याओं का समाधान सम्भव है। जीवन के वास्तविक मूल्यों, गुणों व आदर्शों का अनुसरण करके हमारे छात्र गण भारत वर्ष की समृद्धि तथा वैभव का पुनरोद्धार कर सकेंगे। अतः इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि वैदिक कालीन शिक्षाके तत्वों की उपयोगिता वर्तमान में भी हमारे जीवन में है। अतः इस शोध कार्य में वैदिक कालीन शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तावित शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है–

1. वैदिक शिक्षण पद्धतियों एवं वर्तमान शिक्षण पद्धतियों का अध्ययन करना।
2. शिक्षक और छात्र को वैदिक आदर्श के प्रति निष्ठावान बनाना।
3. वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्य का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का अध्ययन।
4. भारतीय शिक्षा को एक आदर्श स्वरूप प्रदान करना जोसम–सामयिक परिस्थितियों के अनुकूल अपनी सार्थकता सिद्ध करसके।
5. वर्तमान शिक्षा प्रणाली का वैदिक शिक्षाप्रणाली के सन्दर्भ में समीक्षात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

प्रस्तावित शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है–

1. वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था का उल्लेख चारों वेदों जैसे–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद (संहिता), ब्रह्मण ग्रथों, आरण्यकों, उपनिषदों एवं वेदागों से जानकारी प्राप्त होती है।
2. वैदिक कालीन शिक्षा के मौलिक सिद्वांतों के अध्ययन से वैदिक कालीन शिक्षा के मूलभूत तत्वों, धारणाओं और मानवीय उद्देष्यों की जानकारी प्राप्त होती है।
3. वर्तमान की अधिकांश शिक्षण पद्धति वैदिक कालीन शिक्षण पद्धति का प्रतिनिधित्व करती है।
4. अनुशासन व नैतिकता पर आज सभी विद्यालयी स्तर पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

 Copyright @ 2024 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-14, Issue-12, No.05, December: 2024

शोध प्रश्न –

1. क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति विद्यार्थियों के व्यक्तितव का सर्वांगीण विकास करती है ?
2. क्या वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में छात्र–षिक्षक संबंध पर विशेष ध्यान दिया जाता है ?
3. क्या वर्तमान शिक्षापद्धति में छात्र–षिक्षक व्यवहार/संबंध नैतिक मूल्यों के अनुकूल है?
4. क्या वर्तमान शिक्षापद्धति संस्कारों पर आधारित है ?
5. क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध करवाती है ?
6. क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति भैतिकतावाद को बढ़ावा देती है ?
7. क्या वर्तमान शिक्षा पद्धति पर वैदिक कालीन शिक्षासिद्धांतों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ?
8. क्या वैदिक कालीन शिक्षा वर्तमान समय में प्रांसगिक है ?
9. क्या वैदिक कालीन शिक्षा वर्तमान में छात्रों को धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सशक्त बना सकती है ?

शोधअध्ययन विधि–

प्रस्तावित शोध का विषय ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है। अतः शोध अध्ययन में ऐतिहासिक विधि एवं समीक्षात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन की परिसीमाएं –

प्रस्तावित शोध अध्ययन– ”वैदिक कालीन शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता : एक समीक्षात्मक अध्ययन''अपने आप में एक विस्तृत क्षेत्र है। अतः शोधकर्ता के समय एवं संसाधनों को देखते हुए प्रस्तुत शोध अध्ययन का सीमांकन अति आवश्यक है। जिससे शोधार्थी अपने शोध अध्ययन के निर्दिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त कर सके। वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था एवं वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के बीच विश्लेषण, विवेचन एवं समीक्षा को इस अध्ययन क्षेत्र में सम्मिलित किया गया है।

शोधार्थी का अध्ययन विषय क्षेत्र शिक्षा शास्त्र से सम्बन्धित है। इसलिए शोधार्थी द्वारा वैदिक कालीन संस्कृति– जैसे– राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक स्थिति पर सीमित रूप में प्रकाश डाला गया है।

निष्कर्ष :–

वास्तव में वेद शब्द अपने आप में इतना व्यापक तथा गहन अर्थवाला है कि विश्व की समस्त ज्ञान इसमें समाहित हो जाता है। भारतीय शिक्षा का आदि स्त्रोत – निसन्देह वेद ही था तथा इन्हीं के अनुरूप भारतीयों का सम्पूर्ण जीवन दर्शन निर्धारित हआ। वैदिककालीन युग में वेदों का ज्ञान भारतवासियों के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया था तथा यह ज्ञान आज भी भारतीयों के जीवन दर्शन में विभिन्न रीतियों प्रथाओं तथा परम्पराओं के रूप में विद्यमान है। वैदिककाल में यज्ञकार्य ऋषियों का एक कार्य अनुभव था जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण से काफी महत्पूर्ण माना जाता था। वैदिककालीन यज्ञ केवल मौखिक आलाप, उच्चारण संगत, अग्नि प्रज्वलन अथवा आहुति मात्र नहीं था वरन् में सुविचारित वैज्ञानिक क्रियाकलाप थे जो वैज्ञानिक परीक्षणों पर आधारित होते थे तथा इनका एक प्रमुख उदेश्य भौगोलिक परिस्थितियों को अपने अनुरूप बनाना होता था। ऋषि लोग अपने सिद्धो के साथ विभिन्न प्रकार के प्रायोगिक क्रियाकलाप सम्पन्न करते प्रत्यक्ष सहभागिता के द्वारा स्वतः ही शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन अनौपचारिक ढंग से होता रहता था जो कालान्तर में औपचारिक स्वरूप ग्रहण कर लिया। परिणामतः वैदिककाल में गुरूकुल आधारित शिक्षा प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ।

वैदिककाल में जीवन दो प्रकारो परा तथा अपरा में विभक्त था परा का अर्थ थ कि ज्ञान कर्म तथा उपासना के द्वारा ब्रह्म अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करना जबकि अपरा का अर्थ था संगठित तथा नियोजित समाजिक व्यवस्था का संचालन करना। इससे स्पष्ट है कि परा के लिए आलौकिक अर्थात ईश्वरीय विद्याओं का ज्ञान आवश्यक था तथा 'अपरा' के लिए लौकिक अर्थात सामाजिक विधाओं का ज्ञान महत्वपूर्ण था। इन्ही कारणों सेवैदिक काल में शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य छात्रो की शारीरिक, मानसिक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास इस तरह से करना था। जिससे मोक्ष प्राप्ति के सर्वोच्च लक्ष्य की प्राप्ति की जा सके। सादा जीवन तथा उच्च विचारों से निर्दिष्ट होनेवाली शिक्षा में छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता था। वैदिक काल में बालको को प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही प्रारम्भ हो

Copyright @ 2024 Author

जाती थी। इस गृह आधारित शिक्षा का उदेश्य गुरूकुलो में उपनयन के बाद प्रदान की जानेवाली औपचारिक शिक्षा के लिए बालको को तैयार करना होता था। शब्दों का उच्चारण, शब्द ज्ञान, भाषा व्याकरण तथा गणित की प्रारम्भिक बातें घर पर बालको को सिखाई जाती थी। इस प्रकार घर ही बालक का प्रथम परन्तु अनौपचारिक शिक्षा संस्था होती थी। औपचारिक संस्थाओं के रूप में ऋषियों द्वारा संचालित आगम होते थे। जिन्हें गुरूकुल कहा जाता था। विद्यार्थियों को उपनयन के उपरान्त गुरूकुल में ही रहना होता था तथा गुरूकुल के नियमों का पालन करना होता था। गुरूकुल में शैक्षिक तथा अध्यात्मिक वातावरण के निर्माण पर अत्यन्त बल दिया जाता था। गुरूकुल का जीवन अत्यन्त सरल तथा सहज होता था। उसकाल में काशी मिथिला, कॉची उज्जैन, प्रयाग कैकय तन्जौर तथा मालखण्ड आदि अनेक स्थान शिक्षा के लिए प्रसिद्ध थे।

गुरूकुल में प्रवेश केवल सदाचार तथा योग्यता के आधार पर होता था। छात्रो को गुरूकुल के परम्पराओं तथा नियमों के अनुकुल आचरण करना पड़ता था। छात्र सामान्यतः गुरूकुल में 12 वर्ष तक अध्ययन करते थे। परन्तु अधिक विस्तृत एवं गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक छात्र 12 वर्ष से अधिक अवधि तक भी गुरूकुल में अध्ययन करते थे। गुरूकुल में छात्रों को कठोर अनुशासन में रहना होता था। वैदिककाल में गुरूकुलो में रहने वाले छात्रो के द्वारा पहनी जानेवाली वेशभूषा निश्चित रहती थी। गुरूकुल की परम्पराओं तथा नियमों के प्रतिकुल आचरण करने पर छात्रो को गुरूकुल से निष्कासित कर कर दिया जाता था।

वैदिक कालीन शिक्षा में छात्रो को ज्ञान प्रत्यक्ष रूप से प्रदान किया जाता था। गुरू का प्रमुख स्थान था। शिक्षा संस्कृत भाषा में दी जाती थी। शिक्षक छात्रो को उनकी योग्यतानुसार तीन वर्गो में विभाजित कर लेता था, महाप्रज्ञ, मध्यमप्रज्ञ तथा अल्पप्रज्ञ अर्थात शिक्षा प्रणाली व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धान्त पर आधारित थी। छात्र व्यक्तिगत भिन्नता के आधार पर श्रवण मनन तथा चिन्तन करते थे। शिक्षण हेतु प्रश्नोतर, कहानी व्याख्यान वाद–विवाद तथा क्रियाकलाप आदि विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता था। वैदिक काल में श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन (भाव अनुभूति) नाम की तीन अध्यपन विधियों की चर्चा मिलती है।

वैदिक कालीन शिक्षा का उदेश्य मानव का सर्वागिंण विकास करना था। छात्रों को अपना शारीरिक मानसिक सामाजिक तथा अध्यात्मिक विकास करने के पूर्ण अवसर दिये जाते थे। वैदिक शिक्षा का उदेश्य नैतिक चरित्र के साथ–साथ व्यक्तित्व का सर्वागिंण विकास करना था। जिससे व्यक्तिगत विकास के साथ–साथ सामाजिक कुशलता प्राप्त कर सके।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली से पूर्णत भिन्न दृष्टिगोचन होती है। पाश्यात्प सभ्यता एवं संस्कृति के अधानुकरण में हम अपने प्राचीन आदर्शो को विस्मृत करते जा रहे है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली के आदर्श तत्वों को वर्तमान शिक्षा में समाहित करके छात्र असंतोष अनुशासन हीनता बेरोजगारी, नैतिक तथा चारित्रिक पतन आदि जैसा समस्यायों का समाधान संभव है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राचीन वैदिक कालीन शिक्षा की अनेक विशेषताऐं आधुनिक समय में पूर्णरूपेण प्रासंगिक तथा उपयोगी है। आदर्शवादिता अनुशासन, गुरू शिष्य संबंध, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षण विधि तथा प्रविधि पाठयक्रम तथा सरल जीवन शैली आदि विशेषताओं को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समावेश करके अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

- ऋग्वेद, पारडी, सूरत 1957
- अथर्ववेद– पं0 राधाकृष्ण श्रीमाली, नई दिल्ली 1995
- ए.एस अल्तेकर– प्रचीन भारतीय शासन पद्धति, इलाहाबाद 1948
- ए. एल बाषम – अदभूत भारत
- रोमिला थापर – भारत का इतिहास
- डी.डी. कौशाम्बी – प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता
- डी.एन. झा – प्राचीन भारत
- राधाकृष्ण चौधरी – प्राचीन भारत का इतिहास
- पी.डी. पाठक – भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्यायें।

 Copyright @ 2024 Author